विश्व बैंक (World Bank)

Paper-VII
M.A. IInd
Sem:- 18-20
By
C.D. Aman
Deptt of
Pol. Sc
B.R.A.B.U
Muzaffarpur.
25/4/20

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्र हुए नवोदित राष्ट्रों के विकास हेतु संयुक्त राष्ट्र के द्वारा स्वतंत्र हुए नवोदित राष्ट्रों के विकास हेतु ब्रेटन वुड्स व्यवस्था (Bretton Woods System) के तहत आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु दो निकायों की स्थापना की गयी थी जिसमें एक था IMF तथा दूसरा था World Bank / World Bank या नाम विश्व बैंक की स्थापना यद्यपि दिसम्बर 1945 में की गयी थी जबकि वास्तव में इसने अपना कार्य जून 1946 से प्रारम्भ किया।

विश्व बैंक का मुख्यालय वाशिंगटन में है तथा इसका उद्देश्य निम्नलिखित है:

(I) नवोदित देश के जर्जित अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण हेतु कार्य करना।

(II) ऐसे देशों के आर्थिक निर्माण के साथ-साथ अन्य क्षेत्र जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक आदि के विकास हेतु ~~कार्य~~ कार्य करना।

(III) उपरोक्त विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक विकास हेतु नवोदित राष्ट्रों को दीर्घकालीन पूंजी उपलब्ध कराना

(IV) नवोदित राष्ट्रों में से अल्पविकसित राष्ट्रों में साधन एवं उत्पादन की सुविधाओं को विकसित करना।

(V) ऐसे राज्यों में भुगतान संतुलन की समानता और अन्तर्राष्ट्रीय ~~विकास हेतु~~ व्यापार के संतुलित विकास हेतु दीर्घकालीन पूंजी विनियोग को प्रोत्साहित करना

(VI) ऐसे राज्यों को लघु एवं वृहत ~~उद्योग~~ इकाइयों ~~एवं~~ एवं आवश्यक परियोजनाओं के निर्माण में सहायता करना तथा उसके कार्यान्वयन हेतु मदद प्रदान करना

(VII) स्वतंत्र हुए नवोदित राष्ट्रों की ~~आर्थिक~~ चूंकि अर्थव्यवस्था जर्जित हो चुकी थी द्वितीय विश्व युद्ध के चलते भी अर्थव्यवस्था शोषितकारी थी अतः उसे ~~युद्ध~~ युद्ध जर्जित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना।

ज्ञात हो कि विश्व बैंक के संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित किये गये थे जो उपरोक्त उद्देश्य / लक्ष्य साम्राज्यवादी राज्यों द्वारा स्वतंत्र हुए वे मौलिक रूप में साम्राज्यवादी राज्यों द्वारा शोषण व द्वितीय विश्व युद्ध में हुए नवोदित राज्यों का हुए नुकसान में रखकर निर्धारित किया गया ~~था~~ इनके अर्थव्यवस्था को हुए नुकसान में रखकर ~~अर्थ~~ विश्व था चूंकि उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर

Scanned with CamScanner

...के उद्देश्य / लक्ष्य निर्धारित किये गये थे अतः स्वभावतः इन उद्देश्यों में सदस्य विकासशील राष्ट्रों का आर्थिक, सामाजिक स्वास्थ्य, शैक्षिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में समुचित विकास बनाना।

विश्व बैंक के उपरोक्त संबंध में उपरोक्त बातों के अध्ययन के पश्चात इसकी सदस्यता एवं मताधिकार का अध्ययन करना जरूरी है। जहाँ तक इसकी सदस्यता का प्रश्न है तो वे राष्ट्र जो IMF के सदस्य हैं वे ही इसकी सदस्यता प्राप्त होते हैं। स्वभावतः विश्व बैंक की सदस्यता हेतु IMF की सदस्यता आवश्यक है। IMF की सदस्यता समाप्त होते ही स्वभावतः विश्व बैंक की सदस्यता समाप्त हो जाती है। अपवाद यह है कि IMF की सदस्यता त्यागने पर भी अगर विश्व बैंक के 75% सदस्य सहमति प्रदान करें तो कोई देश विश्व बैंक का सदस्य बना रह सकता है। यहाँ जो दूसरी बात ध्यान देने की है वह यह कि सदस्य राज्यों को विधि विश्व बैंक के नियम के एवं दायित्वों के अनुसार कार्य करना होता है। अगर कोई सदस्य राज्य इन नियमों एवं दायित्वों का उल्लंघन करता है तो उसे सामान्यतः विश्व बैंक के गवर्नर मंडल द्वारा हटाया जा सकता है फिर कोई सदस्य राज्य स्वयं त्यागपत्र देकर सदस्यता त्याग सकता है।

विश्व बैंक के सदस्यता के संबंध में उपरोक्त बातों के अध्ययन के बाद यह समझ लेना जरूरी है कि जिन देशों ने 31 दिसम्बर 1945 तक सदस्यता ग्रहण करली है वे इसके मौलिक सदस्य हैं जबकि इसके बाद सदस्यता ग्रहण करने वाले राष्ट्र सामान्य सदस्य हैं। मौलिक सदस्यों की कुल संख्या 30 है। वर्तमान समय में इसकी कुल सदस्य संख्या 189 है।

चूंकि विश्व बैंक की पूंजी सदस्य राज्यों के अनुदान से बनती है। अतः सदस्य राज्यों द्वारा दिये गये अनुदान (contribution) के आधार ही सदस्यों को मताधिकार प्राप्त होता है।

विश्व बैंक की सदस्यता एवं मताधिकार के पश्चात अब इसके संगठनात्मक प्रक्रिया के अध्ययन किया जाता है जहाँ तक संगठनात्मक पहलू का प्रश्न है तो इसमें एक बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (Board of Governors) होते हैं जिसमें प्रत्येक देश का एक सदस्य (Governor) और एक स्थानापन्न गवर्नर होते हैं जिनका कार्यकाल 5 वर्षों का होता है।

बोर्ड आफ गवर्नर्स की मे विश्व बैंक की सारी शक्तियाँ निहित होती हैं वर्ष में एक बार इस की बैठक आवश्यक रूप से हुआ करती है

बोर्ड आफ गवर्नर्स के अतिरिक्त विश्व बैंक का एक कार्यकारिणी समिति (Executive Committee) भी होता है। यह बैंक के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को सम्पादित करता है। इसमें कम से कम 22 सदस्य होते हैं। इन 22 सदस्यों मे 5 सदस्य वैसे देशों से होते हैं जिनका बैंक के पूंजी में अधिकतम अंशदान होता है। बाकी सदस्यों का चुनाव होता है।

विश्व बैंक का एक अध्यक्ष होता है जिसकी ~~चुनाव~~ नियुक्ति कार्यकारिणी समिति द्वारा होता है। इसके ~~अ~~ अतिरिक्त अन्य कर्मचारी भी होते हैं जिनकी नियुक्ति भी कार्यकारिणी समिति द्वारा होती है। कार्यकारिणी की सभा। बैंक की अध्यक्षता अध्यक्ष किया करते हैं।

विश्व बैंक ~~के~~ की एक सलाहकार ~~समिति~~ (Advisory Council) भी होती है। इसमें कम से कम सात सदस्य होते हैं। इन सदस्यों की नियुक्ति कार्यकारिणी समिति द्वारा होती है तथा ये बैंकिंग, वाणिज्य, उद्योग-धंधों, कृषि एवं श्रम सम्बन्धी विषयों के विशेषज्ञ होते हैं।

अंत में विश्व बैंक में एक ऋण सम्बन्धी ~~समितियाँ~~ ~~होती है जो~~ समितियाँ होती हैं जो सदस्य राष्ट्रों द्वारा मांगी गयी ऋणों की उपयुक्तता की जांच करती हैं। ऋण सम्बन्धी समितियों में ऋण मांगने वाले राष्ट्र का एक प्रतिनिधि आवश्यक रूप से होता है।

चूंकि विश्व बैंक का कार्य सदस्य राष्ट्रों के विकास के लिए धन मुहैया करना होता है अतः ~~के~~ इसे पूंजी की आवश्यकता होती है जो कि सदस्य राष्ट्रों के अंशदान से प्राप्त होता है। प्रारम्भ में इसकी पूंजी अंशदान समय पर 10,000 डालर निर्धारित किए गए ~~किन्तु समय समय में इसकी पूंजी~~ इसमें वृद्धि की जाती रही।

विश्व बैंक के उपरोक्त अध्ययन के पश्चात अब इसके कार्यों का अध्ययन प्रस्तुत है। जहाँ तक इसके कार्य का प्रश्न है तो वर्तमान में इसका मुख्य कार्य सदस्य राष्ट्रों विशेषकर अल्पविकसित राष्ट्रों को विकास हेतु आवश्यकतानुसार ऋण एवं तकनीकी सहायता प्रदान करना है।

द्वितीय ऋण की मात्रा, ब्याज दर व अन्य आवश्यक शर्तों का निर्धारण बैंक स्वयं करती है।

तृतीय, सामान्यतः बैंक ऋण किसी विशेष परियोजना हेतु स्वीकृती करता है।

योजना हेतु सदस्य राष्ट्रों को उसके व्यक्तिगत चतुर्थ बैंक सदस्य राष्ट्रों गारण्टी पर उपलब्ध करता है।

पंचम, बैंक अपनी पूंजी का 20% तक ऋण सदस्य देशों को दे सकता है।

षष्ठम, उल्लेखनीय है कि वित्तीय प्रदान करने के साथ-साथ विश्व बैंक, जैसा कि ऊपर कहा गया है, सदस्य राज्यों को विभिन्न प्रकार की तकनीकी सहायता भी प्रदान कर रहा है। इस हेतु बैंक ने वाशिंगटन में 'इकोनॉमिक डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट' की स्थापना की है।

यह भी उल्लेखनीय है कि ऋण प्राप्तकर्ता राष्ट्र बैंक को ऋण की वापसी/अदायगी स्वर्ण अथवा उसी मुद्रा में अदायगी करता है जिस मुद्रा में उसने ऋण प्राप्त किया है।

यह सच है कि विश्व बैंक का मुख्य कार्य विकासशील देश एवं अल्पविकसित देशों को विकास हेतु ऋण प्रदान करना है, लेकिन इस क्रम में उसकी नीतियाँ इस प्रकार की है कि विकासशील देशों को ऋण प्राप्त करने में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि बैंक ऋण देने से पूर्व यह देखता है कि जिस राज्य को वह ऋण देता है उससे ऋण भुगतान की आशा है जो उचित नहीं है क्योंकि ऋण लौटाने की क्षमता ऋण उपयोग के उपरांत होती है। फिर विश्व बैंक द्वारा दिए गए ऋणों की ब्याज दर (काफी) ऊँची होती है। कभी-कभी तो प्रथम प्राप्त ऋण की आधी राशि ब्याज के रूप में वापस करना पड़ता है।

—×—